ओते की कहानी

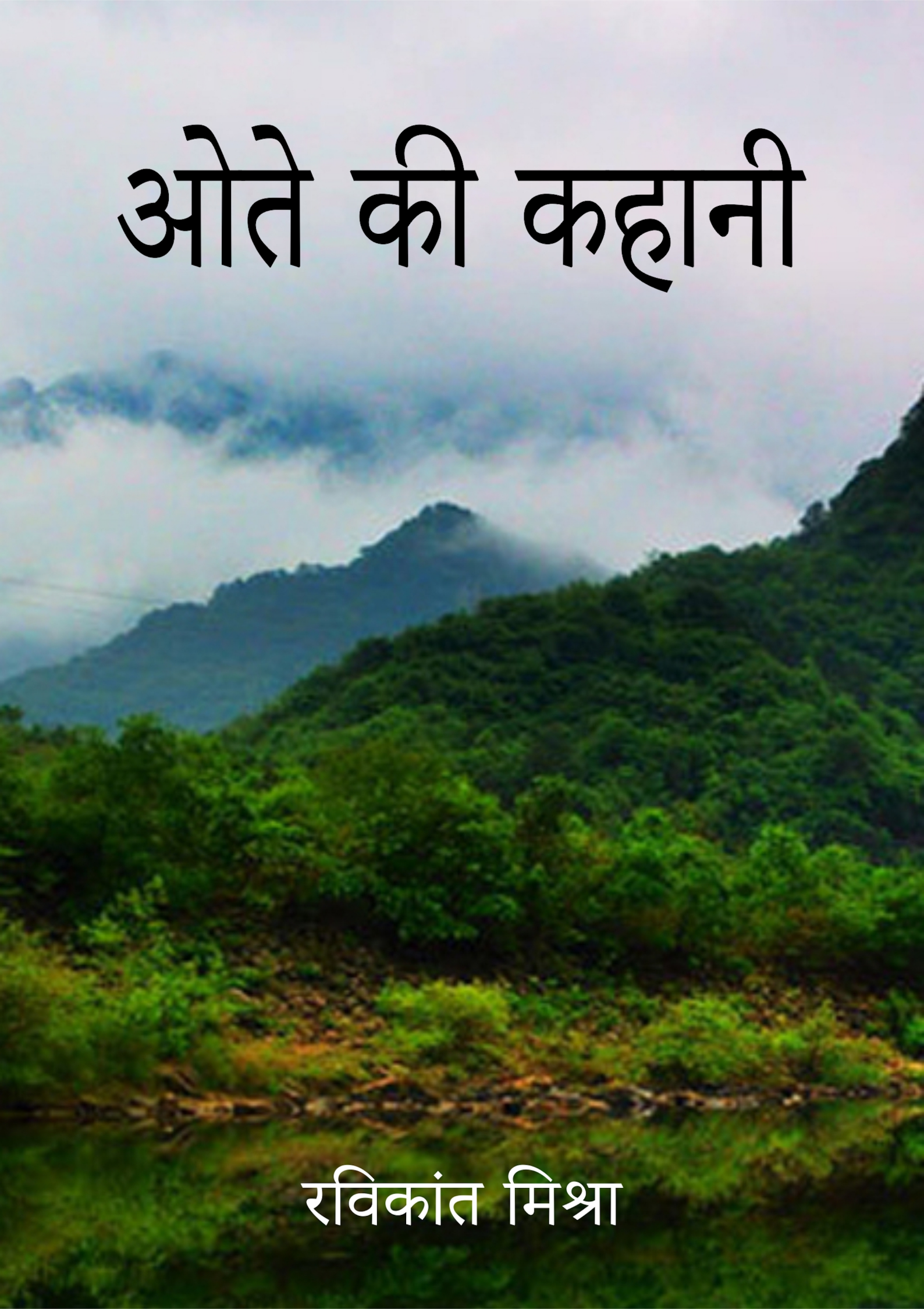

रविकांत मिश्रा

'ओते की कहानी'

रविकांत मिश्रा – 09334431966

खरखाई नदी के किनारे बसा मेरा गांव कुलुपटांगा, जहां एक मिट्टी खपरैल के घर में मेरा जन्म हुआ था। होश सम्भालते ही मैंने अपने आपको रंग बिरंगे मुखौटो के बीच खेलते देखा था।उन मुखौटो से मैं बातें करती थी। उसे अपने सिर पर उठा कर घर में इधर – उधर भागती थी। मुखौटा मेरे लिए खिलौना भी था और मेरे बचपन का साथी भी। बाबा और मां मुखौटा बनाने का काम करते थे। बाबा और मां के बनाये मुखौटे झूम नृत्य करने वाले आकर ले जाते थे, बदले में बाबा के हाथ कुछ रूपये रख जाते थे। बाबा के बनाये मुखौटे हमारे घर के दिवार पर इस तरह टंगे रहते की कभी–कभी ऐसा लगता कि हमारे घर की दिवार मुखौटो की दिवार है, घर के भीतर चारों तरफ मुखौटे ही मुखौटे, इन मुखौटे में जानवर, देवता और मनुष्य के मुखौटे थे। मेरा बचपन इन मुखौटो के बीच पल रहा था, बढ़ रहा था। तभी मेरे भाई का जन्म हुआ, रात जब उसके रोने की आवाज मेरे कानों में पड़ी तब मैं गहरी नींद में सो रही थी, उसके जोर–जोर से रोने के कारण मेरी नींद खुल गई थी। मैं अलसाई आंखों से खाट पर उठ बैठी। सामने दरवाजे पर बाबा बैठे लम्बी सी बीड़ी पी रहे थे, दूसरे कमरे से बच्चे के रोने की आवाज लागातार आ रही थी। मैंने अपनी तोतली जुबान से बाबा से पूछा– बाबा यह कौन लो रहा है? बाबा बीड़ी का धुआं मुंह से बाहर फेंकते हुए बोले– ओते तुम्हारा भाई आया है। अब तुम्हे उसे खिलाना है, उसके साथ खेलना है । इतना सुन मैं तेजी से खाट से नीचे उतर गई थी ... और अपने भाई को देखने के लिए तेजी से उस कमरे के भीतर भागी, जहां गांव की औरतें जोर–जोर से हंस की बातें कर रही थी। मैं जब उस कमरे के भीतर पहुंची तो देखी मेरा भाई खाट में मां के बगल में सोया हुआ दूध पी रहा था... गांव की औरतों में से एक औरत दाईमनी मुझे गोद में उठाकर बोली– ओते देख तेरा भाई आया, बिल्कुल तेरे जैसा नहीं है, बिल्कुल अपनी मां पर गया है। तु तो अपने बाबा पर गई है। अब तु अकेले मुखौटो से नहीं खेल पायेगी, अब तेरा भाई भी मुखौटो से खेलेगा। मेरा मासूम भाई खाट पर किसी देवता की तरह सो रहा था। उसका चेहरा देवता वाले मुखौटो से बहुत मिलता जुलता था। मैंने झट से दिवार पर नजर डाली तो सामने एक कतार से देवता के मुखौटे लगे हुए थे। मैं तोतली जुबान में बोली – इसका चेहरा तो उस देवता वाले मुखौटे से मिलता है। इस पर गांव की औरते खिल–खिलाकर हंसने लगी थी... दाईमनी मेरा माथा चुमते हुए बोली– हां ओते, तेरा भाई देवता जैसा ही है, पर तुझे इसकी देख–भाल करनी